Dainik Bhaskar (Indore), 12th November 2020, DD-2 (Page No.11, Front page-2)

गर्व की बात • न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी हर साल यह प्रतियोगिता आयोजित करती है

साइबर सिक्योरिटी अवेयरनेस प्रतियोगिता में आईआईटी इंदौर को देश में नंबर वन और दुनिया में आठवां स्थान मिला

भास्कर संवाददाता | इंदौर

आईआईटी इंदौर के कंप्यूटर साइंस विभाग के छात्रों की टीम ने साइबर सिक्योरिटी अवेयरनेस वर्ल्डवाइड (सीएसएडब्ल्यू) प्रतियोगिता में आठवां स्थान हासिल किया है। आईआईटी की टीम देश में पहले स्थान पर रही। न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी (एनवायय्) का इंजीनियरिंग कॉलेज हर साल यह प्रतियोगिता आयोजित करता है, जिसमें कई देशों की टीमें शामिल होती हैं। एनवाययू की ओर से भारत में इस प्रतियोगिता को आईआईटी कानपुर आयोजित करता है। आईआईटी इंदौर की टीम ने इसके तीन अलग-अलग राउंड में श्रेष्ठ प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के दौरान टीमों को सुरक्षित तरीके से हैकिंग भी करना होती है। आईआईटी की टीम बाइट बैंडिट्स ने सितंबर में हुए पहले राउंड में अपने प्रदर्शन के आधार पर फाइनल राउंड में जगह बनाई। इसमें उनका मुकाबला 15 टीमों से था। आईआईटी कानपुर के निदेशक प्रोफेसर संदीप शुक्ला के अनुसार प्रतियोगिता के कुल तीन हिस्से होते हैं। एप्लाइड रिसर्च कॉम्पीटिशन, एम्बेडेड सिक्योरिटी चैलेंज और कैप्चर द फ्लैग।

आईआईटी इंदौर की टीम।

फाइनल प्रतियोगिता में टीमों को लगातार 36 घंटे काम करना होता है। एम्बेडेड सिक्योरिटी चैलेंज, इंटरनेट ऑफ थिंग्स आधारित राउंड था, जिसमें प्रतिभागियों को वाई-फाई एक्सेस पॉइंट के फर्मवेयर को हैक करना था। टीम में विष्णुनारायण केएल, मृगांक कृशन, वैभव आनंद और सार्थक जैन शामिल थे। आईआईटी की टीम ने पिछले साल भी इस प्रतियोगिता में पहला और दुनिया में नौवां स्थान हासिल किया था।

हिमालय ग्लेशियर पर रिसर्च के लिए छात्र को बेस्ट स्टूडेंट प्रेजेंटेशन अवॉर्ड

इंदौर | आईआईटी इंदौर के छात्र साकेत दुबे को इंडो-यूके वर्कशॉप में बेस्ट स्टूडेंट प्रेजेंटेशन अवॉर्ड दिया गया। आईआईटी मुंबई में हुई इस वर्कशॉप में साकेत ने ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड्स इन इंडियन हिमालया विषय पर प्रेजेंटेशन दिया था। वे आईआईटी के डॉ. मनीष कुमार गोयल के सुपरविजन में पीएचडी कर रहे हैं। वर्कशॉप का आयोजन यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिस्टल और आईआईटी बॉम्बे ने किया था। वर्कशॉप में इंग्लैड, नीदरलैंड और इसरो के वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने भी लेक्चर दिए थे। साकेत का प्रेजेंटेशन हिमालय क्षेत्र में मौजूद ग्लेशियर झीलों पर किए गए अध्ययन पर आधारित था। इसमें दर्शाया कि ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (जीएलएफओ) की स्थिति धारा क्षेत्र में रहने वाले समुदायों को गंभीर खतरा हो सकती है। ये 2013 में उत्तराखंड में हुए केदारनाथ हादसे जैसा भयानक भी हो सकता है। भारतीय हिमालय क्षेत्र में 23 क्रिटिकल झीलें हैं, जिनमें आउटबर्स्ट की पूरी आशंका है जो मानव जीवन के लिए घातक साबित हो सकती हैं। 67 ग्लेशियल झीलों के बहाव मार्ग पर कम से कम एक हाइड्रो पावर प्रणाली है। आउटबर्स्ट का एक कारण एवलांच यानी बर्फीला तूफान हो सकता है। यदि ये तूफान झील में प्रवेश करेगा तो पानी सारी बाधाएं तोड़कर बहेगा।